अर्चना गुप्ता

कोरोना महामारी का ज्योतिषीय दृष्टिकोण

कोरोना वायरस पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी महामारी के रूप में सामने आया है। अमेरिका चीन फ्रांस इटली ब्रिटेन स्पेन जर्मनी जैसे शक्तिशाली देश भी इस जानलेवा बीमारी के आगे घुटने टेक चुके हैं। सामाजिक आर्थिक गतिविधियां अवरुद्ध हो गई हैं। आइए ज्योतिष के माध्यम से इसका विश्लेषण करते हैं ...

ज्योतिषीय विधाओं में एक विधा है मेदिनी ज्योतिष. ..जिसमें प्राकृतिक आपदा और महामारी का विश्लेषण किया जाता है। इसके अनुसार जब सात्विक शक्तियां सूर्य चंद्र और गुरु कमजोर अवस्था में गोचर कर होते हैं तब धर्म की हानि होती है, प्रलय की स्थिति उत्पन्न होती है।

मार्च 2019 से राहु मिथुन राशि से और केतु धनु राशि से गोचर कर रहे थे। 5 नवंबर को जब गुरु ने धनु राशि में प्रवेश किया तभी इस बीमारी का आगाज हो गया था। 26 दिसंबर को मूल नक्षत्र में सूर्य ग्रहण के साथ बुध गुरु भी मूल नक्षत्र में थे और शनि केतु चंद्र पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में थे इस प्रकार 6 ग्रह धनु राशि में थे।

राहु सूर्य चंद्र को नुकसान पहुंचाता है तो केतु नक्षत्रों को। मूल नक्षत्र गंडात नक्षत्र है जो प्रलय को दर्शाता है इस पर देवी निरति का अधिपत्य है। निरति का संबंध धर्म के अभाव से है। विध्वंस की देवी हैं। अतः यह

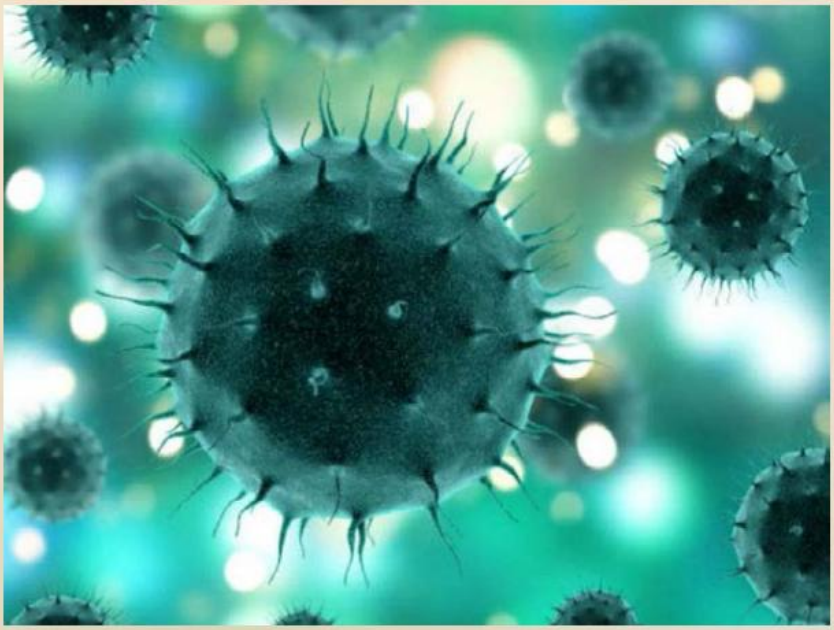

युति भी संक्रमण के द्वारा महामारी फैलाने और प्राकृतिक आपदाओं का कारण बना। धनु राशि पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करती है अतः यह बीमारी पूर्व दिशा चीन की ओर से आई।

15 जनवरी 2020 को जब केतु अपने मूल नक्षत्र के चौथे चरण में पहुंचे तब कोरोना वायरस ने रंग पकड़ना शुरू कर दिया। 24 जनवरी को मकर राशि में शनि के गोचर के साथ ही शनि राहु का षडाष्टक योग रोग और मृत्यु जैसी अशुभ स्थिति के लिए उत्तरदायी है। 18 मार्च को केतू ने मूल नक्षत्र के तीसरे चरण में प्रवेश किया जो कि भारत देश की कुंडली का 64 वा नवमांश है अतः भारत देश के लिए संक्रमण रोग के कारण मृत्यु तुल्य कष्ट का

स्थिति बनी। इसके साथ ही मकर राशि में 22 मार्च को मंगल के गोचर और 31 मार्च को गुरु के गोचर में इस महामारी को प्रचंड वेग से फैला दिया। 14 अप्रैल को सूर्य के मेष राशि में आने पर कोरोना वायरस के संक्रमण का प्रभाव थोड़ा कम हुआ। प्रथम मई को शनि के मकर राशि में सूर्य के उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में वक्री होने के कारण आयुर्वेदिक पद्धति से मिलने वाले लाभ की उम्मीदें कम कर दी हैं। 21 मई को केतु ने मूल नक्षत्र के दूसरे चरण में प्रवेश किया और राहु ने आद्रा नक्षत्र को छोड़कर मृगशिरा नक्षत्र में प्रवेश किया। अतः 18 मार्च से 21 मई का समय भारत देश के लिए भयावह स्थिति रही (भारत देश के 64 पर नवमांश पर केतु का गोचर)। 25 मई को बुध के मिथुन राशि में गोचर होने पर अनुमान लगाया जा रहा था कि बुध अपनी ही राशि में प्रबल होकर काल पुरुष की तृतीय भाव/भावेश को मजबूत करेंगे और श्वसन तंत्र से संबंधित परेशानियों में कमी आएगी लेकिन ऐसा हुआ नहीं। राहु केतु ने भाव और भावेश दोनों को जकड़ कर इन परेशानियों से निकलने नहीं दिया। 19 जून को मंगल की मीन राशि में प्रवेश कर मिथुन राशि पर सूर्य बुध राहु का दृष्टि देने के कारण संक्रामक योग में कमी के आसार नजर आ रहे थे, लेकिन 21 जून को आंशिक सूर्यग्रहण के कारण विषम परिस्थितियों में सुधार की उम्मीद कम है इसके साथ ही 30 जून को गुरु के वक्री होकर धनु राशि में प्रवेश होने के कारण राहु केतु अक्ष पर आ जाने के कारण इस संक्रामक रोग में जीव को कोई विशेष लाभ नहीं मिला। 23 सितंबर 2020 को राहु केतु के स्थान परिवर्तन के बाद ही राहु शनि का षडाष्टक योग समाप्त हो पाएगा जिसके बाद भारत समेत पूरे विश्व को कोरोना वायरस की महामारी से छुटकारा मिलने की उम्मीद है। 14 सितंबर 2020 को शनि के मार्गी होने पर कोई कारगर इलाज/वैक्सीन मिलने की उम्मीद।

शनि रसायन, असाध्य रोग, कष्ट कारक, गुरु जीव कारक तथा केतु रहस्यमयी। तीनों ग्रहों की दृष्टि मिथुन राशि पर है जो श्वसन तंत्र और फेफड़ों का कारक है पर पड़ रही है। इन सभी को एक साथ जोड़ने पर स्पष्ट हो जाता है कि कोरोना वायरस जैसे रोग मुख्य रूप से श्वसन तंत्र पर हमला करते हैं ।

इस प्रकार इस योग में लग्न/लग्नेश, मंगल (काल पुरुष के प्रथम भाव का स्वामी संपूर्ण रक्त का इन्फेक्शन), सूर्य (काल पुरुष के प्रथम भाव का कारक ..रोग प्रतिरोधक क्षमता, तृतीय भाव/भावेश और बुध (काल पुरुष के तृतीयेश, चतुर्थ भाव/भावेश तथा चंद्र (रक्त संचार) पर शनि राहु केतु मार्केश/बादकेश के पापी प्रभाव की भूमिका है। यह संक्रामक रोग इतना घातक नहीं जितना कि दूसरे अंगों को प्रभावित कर निष्क्रिय कर देता है और रोगी की मृत्यु हो जाती है।

आइए इस रोग को उदाहरण कुंडलियों द्वारा समझते हैं।

उदाहरण कुंडली 1 में लग्नेश मंगल मारक भाव में, श्वसन तंत्र का कारक

उदाहरण कुंडली 1 :
23 सितंबर 1969
समय : 11:44 प्रातः, सूरत

बुध और इम्यूनिटी का कारक सूर्य मार्केश गुरु के साथ छठे से छठे एकादश भाव में, तृतीयेश/ चतुर्थेश शनि नीच के वक्री होकर छठे भाव में, वक्री शनि के प्रभाव में मंगल गुरु बुध सूर्य, मिथुन राशि सभी, चंद्र स्वयं बादकेश होकर चतुर्थ भाव में राहु केतु अक्ष पर और दूसरे मार्केश शुक्र से दृष्ट..

30 जून को गुरु के वक्री होने पर

शनि राहु शनि, शनि की दशा लग्नेश मंगल पंचम में बैठकर अष्टम में मिथुन राशि में बैठे सूर्य बुध राहु पर दृष्टि दे रहे हैं, शनि तृतीय में बैठकर पंचम भाव को वक्री होकर दूसरे भाव में बैठे नेटल मंगल को तथा वक्री गुरु और राहु भी नेटल मंगल को प्रभावित कर रहे हैं, मारकेश शुक्र सप्तम भाव में बली होकर लगन को प्रभावित कर रहे हैं और घटना कारक चंद्र बारहवें भाव में नेटल राहु से प्रभावित होकर राहु के ही नक्षत्र में कोरोना पॉजिटिव की घटना दे रहे हैं।

उदाहरण कुंडली 2 : लग्नेश/

उदाहरण कुंडली 2
1 सितंबर 1970
समय : 02:51 प्रातः, मुंबई

चतुर्थेश बुध चतुर्थ भाव में वक्री होकर तृतीय भाव में बैठे तृतीयेश सूर्य षष्ठेशश मंगल और द्वितीयेश चंद्र तथा केतु से संबंध बना रहे हैं, अष्टमेश और राहु के राशि स्वामी होकर शनि की लगन पर दृष्टि है और सूर्य मंगल चंद्र केतु से त्रिकोण ीय संबंध है ..और शनि का पंचम भाव में बैठे मार्केश बाधकेश गुरु और द्वादशेश शुक्र पर तथा अष्टम भाव पर भी दृष्टि है..

बुध यहाँ 22 वे द्रेक्कान के स्वामी और सूर्य 64 वे नवमांश के स्वामी है

5 जुलाई 2020 को

राहु बुध, बुध शनि सूर्य की दशा में बुध सूर्य राहु लग्न पर, वक्री गुरु चंद्र केतु के साथ सप्तम भाव में मारक भाव में नेटल सूर्य चंद्र मंगल केतु तथा शनि को दृष्टि देते हुए, मंगल दशम में, अष्टम भाव में वक्री शनि सूर्य के नक्षत्र में दशम भाव में बैठे मंगल पर दृष्टि देते हुए और वक्री होकर सप्तम से संबंध बनाते हुए और शुक्र द्वादश भाव में गोचर कर रहे थे, जातक की कोरोना के कारण

उदाहरण कुंडली 3
9 अक्तूबर 1990
समय : 06:40. प्रातः, दिल्ली

मृत्यु हो गई।

उदाहरण कुंडली 3 तुला लग्न की पत्री है लग्न में बाधकेस सूर्य नीच के। लग्नेश शुक्र, चंद्र, बुध, के साथ बारहवें भाव में तृतीय भाव में बैठे शनि से दृष्ट। मिथुन राशि में शनि से दृष्ट। षष्ठेश गुरु दशम भाव में उच्च के होकर केतु के साथ चतुर्थ भाव पर दृष्टि दे रहे हैं। चतुर्थ भाव में राहु और मार्केश मंगल अष्टम में बैठकर तीसरे भाव पर दृष्टि दे रहे हैं। लंग्स इन्फेक्शन के पूर्ण योग।

27 अप्रैल 2020 दशा – गुरु बुध बुध सूर्य. शनि गुरु मंगल का चतुर्थ भाव में राहु के ऊपर से गोचर। राहु चंद्र नवम भाव में मिथुन राशि में। सप्तम भाव में बादकेस सूर्य के साथ बुध मंगल से दृष्ट। शनि की लगन पर दृष्टि और गुरु की नेटल सूर्य बुध शुक्र पर दृष्टि। जातक कोरोना पॉजिटिव निकले लेकिन अभी पूरी तरह स्वस्थ हैं।

उदाहरण कुंडली 4 वृषभ लग्न की पत्रिका है। लगन/ लग्नेश शुक्र राहु

उदाहरण कुंडली 4
14 जुलाई 1974
समय : 2:15 प्रातः, मेलेगॉन

केतु अक्ष पर तृतीय भाव में मार्केश मंगल राहु के राशि स्वामी होकर बैठे हैं। तृतीयेश चंद्र बारहवें भाव में केतु के नक्षत्र में। मिथुन राशि में सूर्य बुध शनि के साथ। दशम भाव में अष्टमेश गुरु चतुर्थ भाव और दूसरे भाव में बैठे सूर्य बुध और मिथुन राशि को पीड़ित कर रहे हैं।

21 जून 2020 को दशा राहु राहु चंद्र चंद्र की राहु मिथुन राशि में दूसरे भाव में सूर्य बुध चंद्र के साथ जो नेटल के सूर्य बुध शनि पर से गोचर कर रहे हैं केतु अष्टम में.नवे भाव में गुरु शनि वक्री होकर गोचर कर रहे हैं तृतीय भाव को दृष्टि दे रहे हैं तथा मंगल के मीन राशि में प्रवेश करते ही मंगल की चौथी दृष्टी ने सूर्य चंद्र राहु बुध को पीड़ित किया और जातक कोरोना पॉजिटिव हो गए. मंगल स्वयं नेटल राहु और गोचर के शनि से प्रभावित है।

पता : फ्लैट नं. : 205,
एम. पी. टावर फेज–2, आदित्यपुर,
जमशेदपुर–13, झारखंड
दूरभाष : 7004682731